Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- Mimamsa Darshan

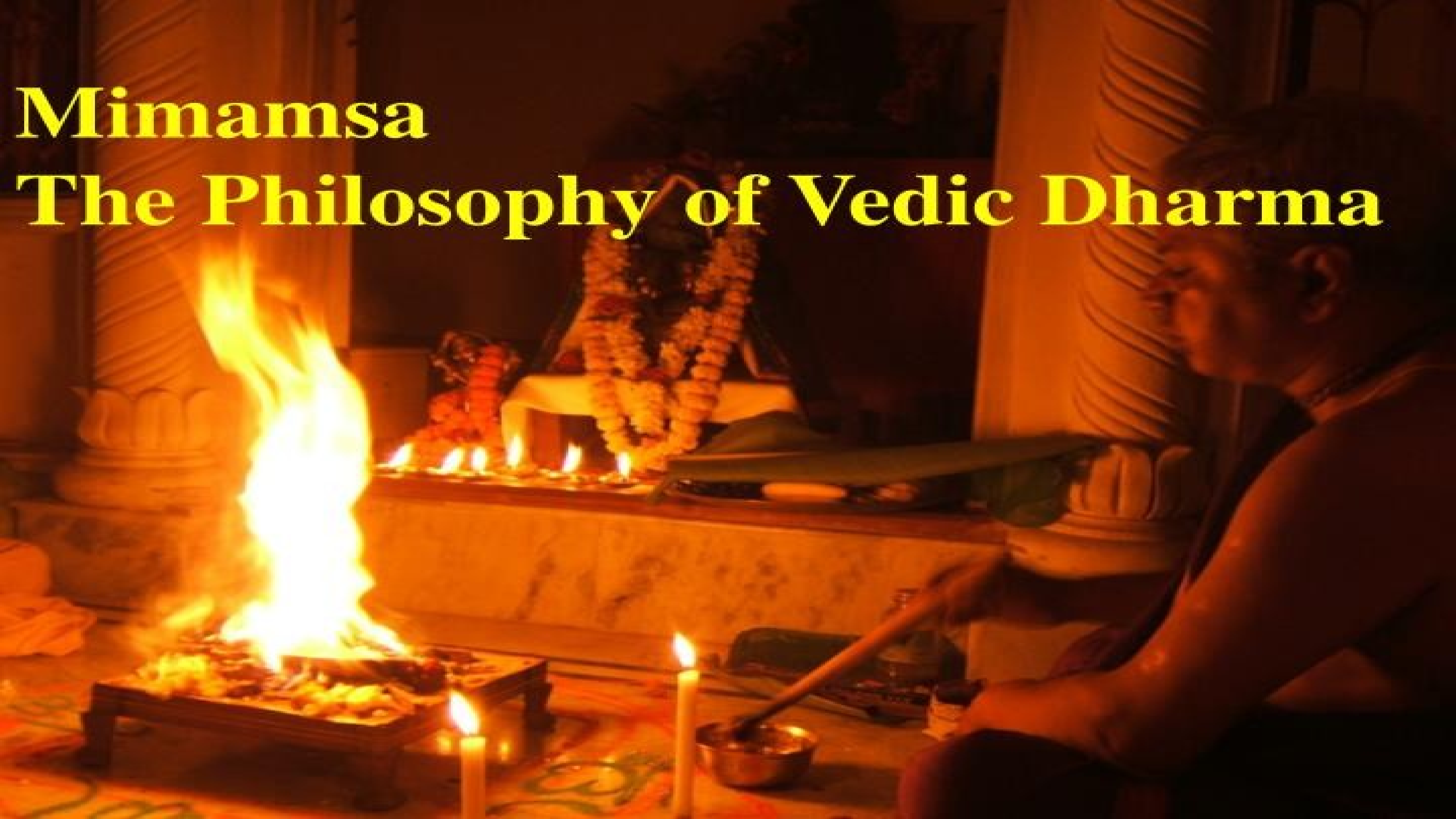
Mimamsa
The Philosophy of Vedic Dharma

प्रस्तुतीकरण की रूपरेखा-

१. प्रस्तुतीकरण से अपेक्षित ज्ञानार्जन

२. मीमांसा दर्शन- सामान्य परिचय

३. मीमांसा दर्शन के उद्भव के कारण

४. मीमांसा दर्शन के सिद्धान्त

५. आयुर्वेद में मीमांसा दर्शन के सिद्धान्त

प्रस्तुतीकरण से अपेक्षित ज्ञानार्जन-

मीमांसा

मीमांसा

आयुर्वे

मीमांसा दर्शन

व्युत्पत्ति-

- **“मान् " धातु** से **सन् प्रत्यय = “मीमांसा”** शब्द
- मान धातु पूजा एवं विचार दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त

शाब्दिक महत्त्व :

- अनुसन्धान
- परीक्षण
- विचार
- वितर्क
- विवेचन
- Critical Analysis

पूर्व मीमांसा दर्शन रचना

पूर्वमीमांसा का मूल ग्रन्थ = जैमिनीसूत्र

१६ अध्यायों में निबद्ध

१२ अध्यायों को द्वादशलक्षणी

अन्तिम चार अध्याय = 'संकर्षकांड',
'देवताकांड' या
'द्वादश अध्यायों का परिशिष्ट'

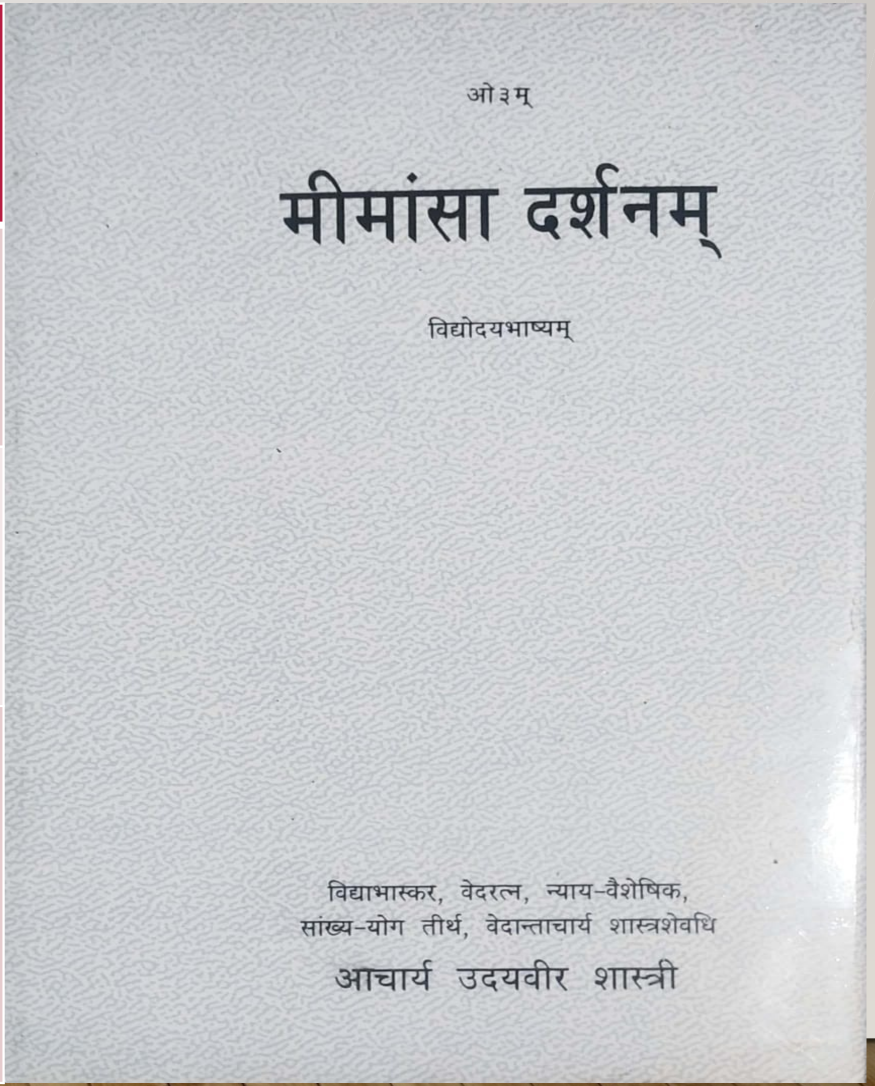

परिचय

- ‘मीमांसा’ शब्द का अर्थ = वस्तु स्वरूप का यथार्थ ज्ञान या जिज्ञासा
- मुख्य विषय = धर्म (धर्माख्यं विषयं वक्तुं मीमांसायाः प्रयोजनम्' |)
- धर्म = कल्याण की प्राप्ति
- वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या , वेद नित्य एवं शाश्वत
- ज्ञान का विचार करने से पूर्व कर्म (कर्मकाण्ड) का विचार
- वेद के अर्थ का ज्ञान कराने वाला शास्त्र = पूर्वमीमांसा
- नास्तिको का खण्डन

पर्याय

- धर्ममीमांसा
- जैमिनीय धर्ममीमांसा
- यज्ञविद्या
- द्वादशलक्षणी

मीमांसा दर्शन

आधार

मीमांसा दर्शन के प्रमुख आचार्य

- प्रवर्तक – जैमिनी
- शबर स्वामी
- कुमारिल भट्ट
- प्रभाकर मिश्र
- मंडन मिश्र

भाष्यकार

शालिकानाथ मिश्र	वाचस्पति मिश्र	सुचरित मिश्र	पार्थसारथि मिश्र	भवदेव भट्ट
भावनाथ मिश्र	नंदीश्वर	भट्ट सोमेश्वर	आपदेव	सोमनाथ
शंकर भट्ट	खंड देव	शंभु भट्ट	वासुदेव दीक्षित	

मीमांसा दर्शन के उद्भव के कारण

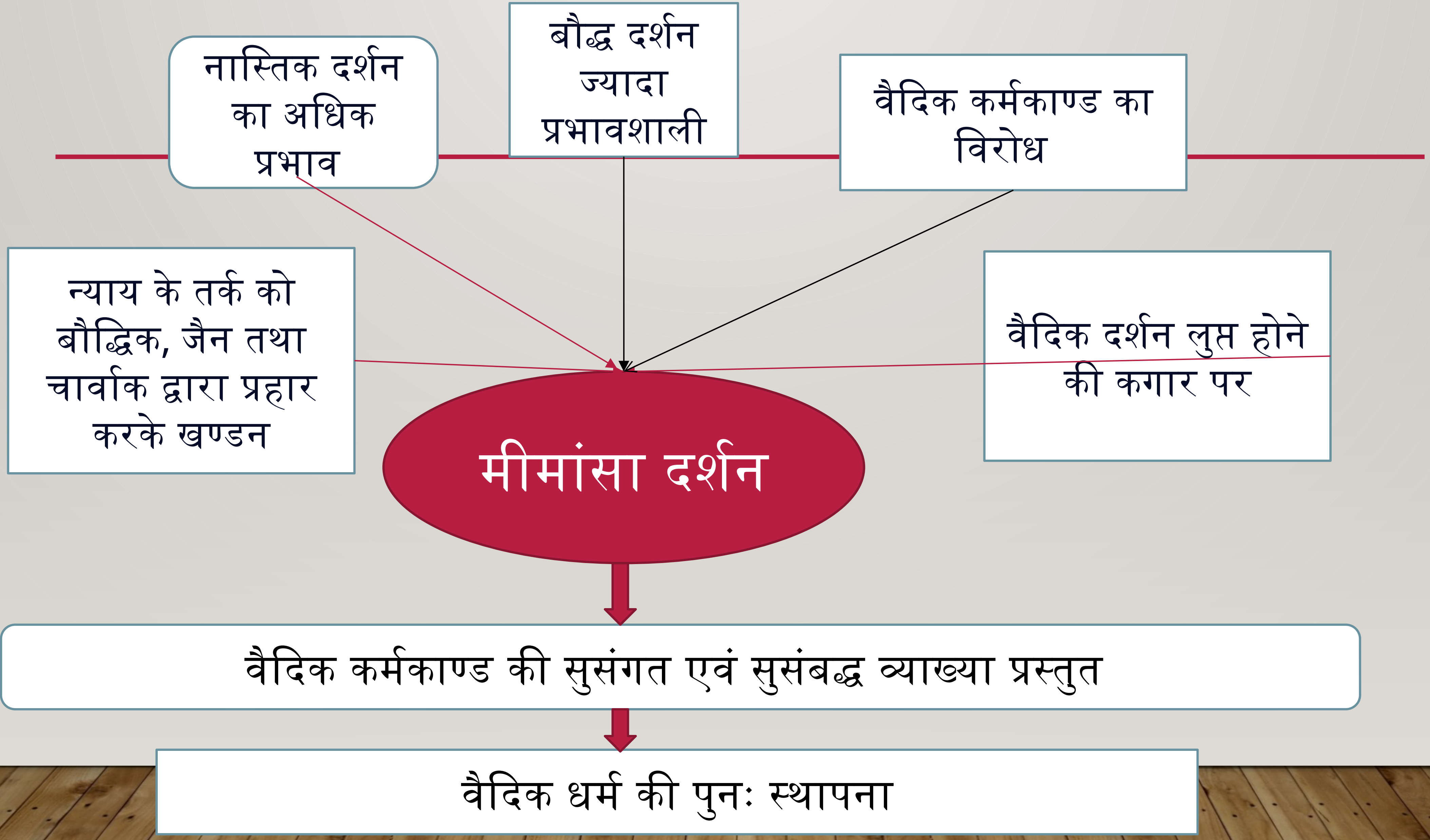

मीमांसा दर्शन के सिद्धान्त

प्रथम सूत्र :

अथातो **धर्म**जिज्ञासा ॥ १ ॥

धर्म

प्रेरणा, उपदेशप्रद वाक्य द्वारा लक्षित अर्थ धर्म है

- वेदप्रतिपाद्यो प्रयोजनवदर्थो धर्मः |
- वेदोऽखिलो धर्ममूलम् |

यजेत स्वर्गकामः

कर्मकाण्ड वर्णन

इष्ट कर्म

पूर्त कर्म

कर्म

नित्यकर्म

पञ्च महायज्ञ,
जप,
वंदना,
प्रातः आराध्य स्मरण

नैमित्तिक कर्म

अवसर विशेष में -
संतान होने पर जातकर्म,
व्रत,
श्राद्ध

काम्य कर्म

लौकिक तथा पारलौकिक कामना से

पञ्च महायज्ञ

ब्रह्म यज्ञ

वेद के पांच विषयों का ग्रहण

वेदः = इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः।

अर्थवाद

मीमांसा तत्त्व

- द्रव्य
- गुण
- कर्म
- समवाय
- शक्ति
- सादृश्य
- संख्या

प्रमाण मीमांसा

अनधिगतार्थगतं प्रमाणम्।

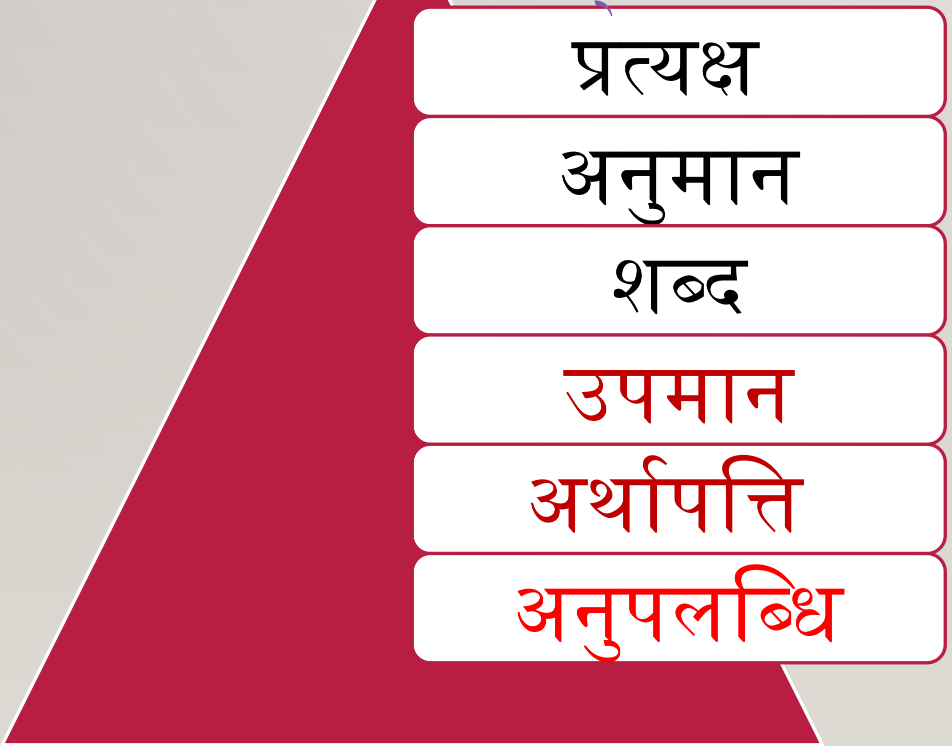

मोक्ष

- ईश्वर की सत्ता नहीं मानता
- कर्म सिद्धान्त
- कर्म ही फल देने में समर्थ
- कर्म और कर्मफल के बीच अपूर्व नामक शक्ति
- अपूर्व = कर्मफल निर्णायक
- त्रिविधस्यापि बन्धस्यात्यन्तिको विलयो मोक्षः
- भोगायतन शरीर, भोगसाधन इन्द्रिय और भोग्य पदार्थ विषय – इन तीनों के आत्यन्तिक विनाश = मोक्ष
- सुख और दुःख दोनों की निवृत्ति = मोक्ष

मोक्ष मार्ग

- नित्य कर्म
- नैमित्तिक कर्म
- काम्य कर्म
- निषिद्ध कर्म

आयुर्वेद एवं मीमांसा दर्शन

- धर्म
- दैव व्यपाश्रय चिकित्सा
- संस्कार
- चतुर्विध पुरुषार्थ
- यज्ञ
- बालग्रह चिकित्सा
- हवन,तप,दान वर्णन
- आचार रसायन
- सदवृत्त वर्णन

धर्म

- सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः|
  सुखं च न विना धर्मात्तस्माद्धर्मपरो भवेत्|| अ.ह्र.सू. २/२०
- त्रिवर्गशून्यं नारम्भं भजेत्तं चाविरोधयन् | अ.ह्र.सू. २/३०
- अनुयायात्प्रतिपदं सर्वधर्मेषु मध्यमाम्| अ.ह्र.सू. २/३०

अधर्म

- जनपदोध्वंस

वाय्वादीनां यद्वैगुण्यमुत्पद्यते तस्य मूलमधर्मः, तन्मूलं वाऽसत्कर्म पूर्वकृतं; तयोर्योनिः प्रज्ञापराध एव| (ca./vi. 3/20)

कर्म फल

- न हि कर्म महत् किञ्चित् फलं यस्य न भुज्यते|

क्रियाघ्नाः कर्मजा रोगाः प्रशमं यान्ति तत्क्षयात्| ||

च/शा १/११७

यज्ञ

- ज्वर-

विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचरपतिं विभुम्|| च.चि.३/३११||

स्तुवन्नामसहस्रेण ज्वरान् सर्वानपोहति|

- पुत्रेष्टि यज्ञ
- दक्ष प्रजापति के यज्ञ विध्वंस से व्याधि उत्पत्ति |

दैवव्यपाश्रय चिकित्सा

- मन्त्रौषधिमणिमङ्गलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनाद। च.सू.११/५४

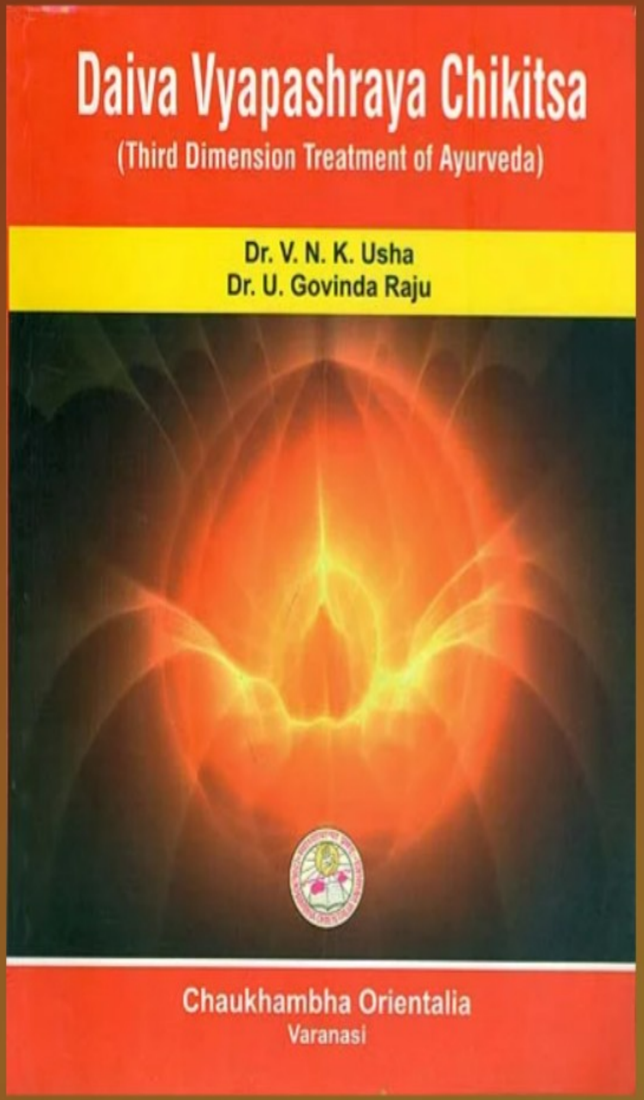

Daiva Vyapashraya Chikitsa (Third Dimension Treatment of Ayurveda)

व्याधि भेद

- दृष्टापचारजः कश्चित्कश्चित्पूर्वापराधजः|

तत्सङ्कराद्भवत्यन्यो व्याधिरेवं त्रिधा स्मृतः|| अ.हृ.सू १२/५७

(कश्चिदात्मकृतात्पूर्वापराधात्-अशुभकर्माख्याज्जातः पूर्वापराधजः)

चिकित्साः

- विपक्षशीलनात्पूर्वः कर्मजः कर्मसङ्क्षयात्|

गच्छत्युभयजन्मा तु दोषकर्मक्षयात्क्षयम्|| अ.हृ.सू १२/५९

(कर्मसङ्क्षयात्-भोगेन प्रायश्चित्तेन वा पापक्षयात्)

मन्त्र

विष चिकित्सा प्रथम उपक्रम

उन्माद चिकित्सा - मन्त्रौषधिमणिमङ्गलबल्युपहारहोमनियमव्रतप्रायश्चित्तोपवास स्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादीनि| च.नि.७/१६

मूढ़गर्भ चिकित्सा - च्यवन मंत्र

औषध संग्रह, वमन पूर्व

मानस रोग चिकित्सा

- मानसं प्रति भैषज्यं त्रिवर्गस्यान्ववेक्षणम्|
  च.सू.११/४७

संस्कार

- जातकर्म संस्कार
- कर्णवेधन संस्कार

कर्मज रोग / पापकर्मज रोग

- कुष्ठ
- श्वित्र
- उदर रोग
- क्रिमिज शिरोरोग

उन्मादनिदान

- प्रज्ञापराधात् सम्भूते व्याधौ कर्मज आत्मनः|

नाभिशंसेद्बुधो देवान्न पितृन्नापि राक्षसान्|| च.नि ७/२१||

- आत्मानमेव मन्येत कर्तारं सुखदुःखयोः|

तस्माच्छ्रेयस्करं मार्गं प्रतिपद्येत नो त्रसेत्|| च.नि ७/२२

अनुचित कर्म ही रोगों के कारण (प्रज्ञापराध)

- कर्मकालातिपातश्च मिथ्यारम्भश्च कर्मणाम्|

विनयाचारलोपश्च पूज्यानां चाभिधर्षणम्|| च.शा 1/104||

- ईर्ष्यामानभयक्रोधलोभमोहमदभ्रमाः|

तज्जं वा कर्म यत् क्लिष्टं क्लिष्टं यद्देहकर्म च||

- यच्चान्यदीदृशं कर्म रजोमोहसमुत्थितम्| च.शा 1/105-106

THANK YOU